अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नौंवी– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) किसी भी जीव का सबसे छोटा भव कितनी आवलिका प्रमाण होता है-
(क) 173 (ख) 1
(ग) 256 (घ) 16777216 (ग)

(ii) वैक्रिय शरीर कितने ठिकाणे (स्थान) में पाया जाता है-
(क) 11 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 6 (घ)

(iii) सबसे थोड़े कौनसे शरीर के सर्वबन्धक हैं-
(क) औदारिक (ख) वैक्रिय
(ग) आहारक (घ) तैजस-कार्मण (ग)

(iv) देशबन्ध-सर्वबन्ध का थोकड़ा भगवती सूत्र के कौनसे शतक में चलता है-
(क) सातवें (ख) आठवें
(ग) नवमें (घ) दसवें (ख)

(v) द्वीन्द्रिय में औदारिक के देशबन्ध का सकाय आसरी उत्कृष्ट अन्तर है-
(क) 1 समय (ख) तीन समय
(ग) अन्तर्मुहूर्त (घ) अनन्त काल (ख)

(vi) स्नातक में कौनसा कल्प नहीं मिलता है-
(क) स्थित (ख) अस्थित
(ग) स्थविर (घ) कल्पातीत (घ)

(vii) अप्रतिसेवी नहीं है-
(क) कषाय कुशील (ख) बकुश
(ग) निर्ग्रन्थ (घ) स्नातक (ख)

(viii) 14 पूर्व का ज्ञान सम्भव है-
(क) पुलाक में (ख) बकुश में
(ग) प्रतिसेवना कुशील में (घ) कषाय कुशील में (घ)

(ix) पुलाक की उत्कृष्ट गति कौनसा देवलोक है-
(क) पहला (ख) आठवाँ
(ग) बारहवाँ (घ) दसवाँ (ख)

(x) सबसे अधिक विशुद्ध संयम स्थान कौनसे निर्ग्रन्थ के हैं-
(क) निर्ग्रन्थ (ख) स्नातक
(ग) पुलाक (घ) कषाय कुशील (ख)

(xi) निर्ग्रन्थ में अवस्थित परिणाम की जघन्य स्थिति है-
(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) 7 समय (घ) 1 मुहूर्त्त (क)

(xii) कौनसे गुणस्थान में वर्धमान परिणाम नहीं मिलता है-
(क) छठा (ख) ग्यारहवाँ
(ग) बारहवाँ (घ) तेरहवाँ (ख)

(xiii) यथाख्यात संयतपना अधिकतम कितने भवों में प्राप्त होता है-
(क) 1 (ख) 3
(ग) 5 (घ) 8 (ख)

(xiv) प्रतिपद्यमान की अपेक्षा से सामायिक संयत 1 समय में अधिकतम होते हैं-
(क) पृथक्त्व सौ (ख) पृथक्त्व हजार
(ग) पृथक्त्व करोड़ (घ) पृथक्त्व हजार करोड़ (ख)

(xv) चक्रवर्ती की जघन्य अवगाहना होती है-
(क) 2 हाथ (ख) 7 हाथ
(ग) 7 धनुष (घ) 10 धनुष (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) नारकी की जघन्य स्थिति क्षुल्लक भव है। (नहीं)
(ii) देवता जब उत्तर वैक्रिय करते हैं तब प्रथम समय में वैक्रिय का सर्वबन्ध होता है। (नहीं)
(iii) एक बार वैक्रिय लब्धि का प्रयोग कर लेने के बाद सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अन्तर्मुहूर्त में पुनः वैक्रिय लब्धि का प्रयोग कर सकता है। (हाँ)
(iv) अभवी जीव में तैजस-कार्मण शरीर का सदैव देशबन्ध होता है। (हाँ)
(v) आहारक शरीर अधिक से अधिक चार बार प्राप्त होता है। (हाँ)
(vi) पुलाकपना एक भव में अधिकतम दो बार प्राप्त हो सकता है। (नहीं)
(vii) कषाय कुशील शाश्वत होते हैं, स्नातक नहीं। (नहीं)
(viii) क्षपक श्रेणि का उत्कृष्ट अन्तर 6 मास का होता है। (हाँ)
(ix) सभी नियंठा लोक के असंख्यातवें भाग का ही स्पर्श करते हैं। (नहीं)
(x) छेदोपस्थापनीय संयतों में अस्थित कल्प नहीं होता है। (हाँ)
(xi) 14 पूर्वों के ज्ञान वाले ही परिहार विशुद्धि चारित्र की आराधना करते हैं। (नहीं)
(xii) चौथे आरे में जन्मा ही पाँचवें आरे में यथाख्यात चारित्र प्राप्त कर सकता है। (हाँ)
(xiii) मरण को प्राप्त कर सभी संयत अहमिन्द्र बन सकते हैं। (नहीं)
(xiv) चक्रवर्ती आर्य क्षेत्र में ही उत्पन्न होते हैं। (हाँ)
(xv) पहले, दूसरे देवलोक से निकला हुआ सभी तेवीस पदवी प्राप्त कर सकता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	स्नातक	(क) औपशमिक एवं क्षायिक भाव	अपरिस्रावी
(ii)	अस्थित कल्पी	(ख) अनुपारिहारिक	कृतिकर्म की नियमा
(iii)	स्थित कल्पी	(ग) 84 हजार वर्ष	10 कल्प की नियमा
(iv)	निर्ग्रन्थ	(घ) 1000 योजन	औपशमिक एवं क्षायिक भाव
(v)	तप करने वाले साधु	(च) 10 कल्प की नियमा	पारिहारिक
(vi)	सेवा करने वाले साधु	(छ) 63 हजार वर्ष	अनुपारिहारिक
(vii)	छेदोपस्थापनीय का अन्तर	(ज) 500 धनुष	63 हजार वर्ष
(viii)	परिहार विशुद्धि का अन्तर	(झ) अपरिस्रावी	84 हजार वर्ष
(ix)	तिर्यंच श्रावक	(य) पारिहारिक	1000 योजन
(x)	माण्डलिक राजा	(र) कृतिकर्म की नियमा	500 धनुष

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) वैक्रिय शरीर धारियों में मेरा देशबन्ध अथवा सर्वबन्ध का अन्तर घटित नहीं होता है। सर्वार्थसिद्ध विमान के देव
(ii) मैं वस्त्रादि की विभूषा करने वाला निर्ग्रन्थ हूँ। उपकरण बकुश
(iii) मैं ऐसा कल्प हूँ, जो निर्ग्रन्थों में वस्त्रों की मर्यादा कराता हूँ। अचेल क्ल्प
(iv) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें वर्धमान एवं अवस्थित, ये दो परिणाम मिलते हैं। 13वाँ गुणस्थान/ सयोगी केवली गुणस्थान
(v) मुझ निर्ग्रन्थ में छह कर्मों की ही उदीरणा होती है। पुलाक
(vi) मैं आहारक तथा अनाहारक रहने वाला निर्ग्रन्थ हूँ । स्नातक
(vii) केवली समुद्घात के अन्तर्मुहूर्त बाद केवली मेरा निरोध करता है। योग
(viii) वेदनीय समुद्घात में मेरे पूर्वबद्ध दलिकों की करण विशेष से निर्जरा

	की जाती है।	असाता वेदनीय कर्म
(ix)	मैं ऐसा चारित्र हूँ जिसमें संज्वलन लोभ कषाय का सूक्ष्म उदय रहता है।	सूक्ष्म सम्पराय चारित्र
(x)	मैं द्रव्य तथा भाव दोनों की अपेक्षा स्वलिंग में ही होने वाला चारित्र हूँ।	परिहार विशुद्धि
(xi)	मैं ऐसी श्रेणि हूँ, जिसमें यथाख्यात चारित्र एक भव में ही आता है।	क्षपक श्रेणि
(xii)	पाँच चारित्र में यथाख्यात चारित्र को छोड़कर मैं शाश्वत हूँ।	सामायिक चारित्र
(xiii)	मैं सदैव वीतरागी रहने वाला संयत हूँ।	यथाख्यात संयत
(xiv)	मैं ऐसी नरक हूँ जिसमें से निकला जीव 23 में से मात्र 3 पदवी प्राप्त कर सकता है।	सातवीं नरक
(xv)	मुझमें आया हुआ जीव 23 में से 14 पदवी प्राप्त कर सकता है।	मनुष्य

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) तीन विकलेन्द्रिय में औदारिक के देशबन्ध की जघन्य स्थिति लिखिए।

उ. एक क्षुल्लक भव में 3 समय कम।

(ii) वनस्पति में परकाय आश्री औदारिक के सर्वबन्ध का जघन्य अन्तर लिखिए।

उ. दो क्षुल्लक भव में 3 समय कम।

(iii) देवों में वैक्रिय के देशबन्ध की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

उ. 33 सागरोपम में 1 समय कम।

(iv) प्रतिसेवना कुशील जघन्य एवं उत्कृष्ट कितना अध्ययन कर सकते हैं ?

उ. जघन्य- आठ प्रवचन माता, उत्कृष्ट- 10 पूर्व।

(v) पुलाक पुलाकपने को छोड़कर किन-किन स्थानों में जा सकता है ?

उ. 1. कषाय कुशील, 2. असंयम।

(vi) परिहार विशुद्धि संयत का अनेक जीव की अपेक्षा से जघन्य एवं उत्कृष्ट काल लिखिए।

उ. जघन्य देशोन दो सौ वर्ष, उत्कृष्ट देशोन दो करोड़ पूर्व।

(vii) सामायिक संयत कितने कर्मों की उदीरणा करते हैं ?

उ. 7, 8 अथवा 6 कर्मों की।

(viii) ज्ञानावरणीय कर्म का वेदन करते हुए मनुष्य में कितने कर्मों को बांधने वाले शाश्वत और अशाश्वत होते हैं?

उ. 7 बांधने वाले शाश्वत, 8, 6, 1 वाले अशाश्वत।

(ix) ज्ञानावरणीय कर्म को बांधते हुए सभी जीवों में कर्म वेदने के भंग क्यों नहीं बनते हैं ?

उ. क्योंकि सभी जीव आठ कर्मों का नियमा वेदन करते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) समुच्चय जीव आश्री वैक्रिय के सर्वबन्ध की उत्कृष्ट स्थिति 2 समय कैसे घटित होती है ?

उ. कोई औदारिक शरीर वाला वैक्रिय लब्धि के प्रथम समय में सर्वबन्ध करता हुआ काल करके देव अथवा नरक में ऋजुगति से उत्पन्न हो तो सर्वबन्ध की उत्कृष्ट स्थिति दो समय घटित होती है।

(ii) किस अपेक्षा से अन्यलिंग पुलाक में माना जाता है ?

उ. पुलाक लब्धि वाला साधु जिसे एक देश से दूसरे देश में जाना आवश्यक हो, बीच में ऐसा राज्य आता हो, जिसमें जैन साधुओं के प्रवेश पर पाबन्दी हो, वहाँ अन्यलिंग अथवा गृहस्थलिंग धारण करके उस राज्य में प्रवेश कर लें। विवश होकर जिनशासन की एवं संघ की सुरक्षा के लिए वह साधु उसी अन्यलिंग अथवा गृहस्थलिंग में रहते हुए ही पुलाक लब्धि का प्रयोग कर ले, इस अपेक्षा से अन्यलिंग, गृहस्थलिंग पुलाक में माना जाता है।

(iii) कषाय कुशील की सभी निर्ग्रन्थों से पर्याय की अपेक्षा तुलना कीजिए।

उ. कषाय कुशील, पुलाक से, बकुश से, प्रतिसेवना कुशील से और कषाय कुशील से छट्ठाणवडिया है। कषाय कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक से अनन्तगुण हीन है।

(iv) 3 भवों में 5 बार निर्ग्रन्थपना कैसे आता है ? समझाइए।

उ. उपशम श्रेणि दो भवों में ही होती है तथा अधिकतम चार बार ही होती है, तभी चार बार ग्यारहवाँ गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना घटित होता है तथा तीसरे भव में जब भी क्षपक श्रेणि करता है, तब उसे 12वें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना एक बार ही आता है, इस प्रकार से 3 भवों में 5 बार निर्ग्रन्थपना आ सकता है।

(v) सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र को समझाइए।

उ. भरत-ऐरवत क्षेत्र में पहले व अन्तिम तीर्थंकर के तीर्थ में किसी साधु की दीक्षा पर्याय का छेद (कमी) किया जावे अथवा उसे नई दीक्षा प्रदान की जावे, उसे सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र कहते हैं।

(vi) संजया का भाव द्वार लिखिए।

उ. 1. सामायिकादि चार संयतों में एक क्षयोपशम भाव होता है।
2. यथाख्यात संयत में औपशमिक और क्षायिक भाव होता है।

(vii) वेदनीय कर्म को वेदते हुए मनुष्य में कर्म वेदन के सभी तीन भंग लिखिए।

उ. A. सभी 8, 4 वेदने वाले, B. 8, 4 वेदने वाले बहुत, 7 वेदने वाला एक, C. 8, 4 वेदने वाले बहुत, 7 वेदने वाले बहुत।

(viii) मोहनीय कर्म को वेदते हुए 5 स्थावर कितने कर्मों को बांधते हैं ? उनमें शाश्वत-अशाश्वत भी लिखिए।

उ. 5 स्थावर के दण्डक 7 या 8 कर्मों को बांधते हैं। दोनों ही शाश्वत है, इसलिए भंग नहीं बनते हैं।

(ix) चक्ररत्न का कार्य लिखिए।

उ. सेना के आगे-आगे आकाश में 'गरणाट' शब्द करता हुआ चलता है और छह खण्ड साधने का रास्ता बतलाता है। चक्रवर्ती की इच्छानुसार जहाँ चक्ररत्न ठहरता है, वहीं सेना का पड़ाव होता है।